

## सूरह क़मर - 54

## سُورَةُ الْقَمَرِ

### सूरह क़मर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है। इस में 55 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में क़मर (चाँद) के दो भाग हो जाने का वर्णन है। इसलिये इसे सूरह क़मर कहा जाता है।
- इस में काफ़िरों को झंझोड़ा गया है कि जब प्रलय का लक्षण उजागर हो गया है, और वह एतिहासिक बातें भी आ गई हैं जिन में शिक्षा है तो फिर वह कैसे अपने कुफ़्र पर अड़े हुये हैं? यह काफ़िर उसी समय सचेत होंगे जब प्रलय आ जायेगी।
- उन जातियों का कुछ परिणाम बताया गया है जिन्होंने रसूलों को झुठलाया। और संसार ही में यातना की भागी बन गई। और मक्का के काफ़िरों को प्रलय की आपदा से सावधान किया गया है।
- अन्तिम आयतों में आज्ञाकारियों को स्वर्ग की शुभ सूचना दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त  
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. समीप आ गई<sup>[1]</sup> प्रलय, तथा दो खण्ड हो गया चाँद।
2. और यदि वह देखते हैं कोई निशानी तो मुँह फेर लेते हैं। और कहते हैं: यह तो जादू है जो होता रहा है।

إِقْرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ

وَإِنْ يَرَوْا آيَةً يُعَرِّضُوا وَيَقُولُوا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ

1 आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से मक्का वासियों ने माँग की, कि आप कोई चमत्कार दिखायें। अतः आप ने चाँद को दो भाग होते उन्हें दिखा दिया। (बुखारी: 4867)

आदरणीय अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद कहते हैं कि रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के युग में चाँद दो खण्ड हो गया: एक खण्ड पर्वत के ऊपर और दूसरा उस के नीचे। और आप ने कहा: तुम सभी गवाह रहो। (सहीह बुखारी: 4864)

3. और उन्होंने झुठलाया और अनुसरण किया अपनी आकांक्षाओं का। और प्रत्येक कार्य का एक निश्चित समय है।
4. और निश्चय आ चुके हैं उन के पास कुछ ऐसे समाचार जिन में चेतवानी है।
5. यह (कुरआन) पूर्णतः तत्त्वदर्शिता (ज्ञान) है फिर भी नहीं काम आई उन के चेतावनियाँ।
6. तो आप विमुख हो जायें उन से, जिस दिन पुकारने वाला पुकारेगा एक अप्रिय चीज़ की<sup>[1]</sup> ओर।
7. झुकी होंगी उन की आँख। वह निकल रहे होंगे समाधियों से जैसे कि वह टिड्डी दल हों बिखरे हुये।
8. दौड़ रहे होंगे पुकारने वाले की ओर। काफ़िर कहेंगे: यह तो बड़ा भीषण दिन है।
9. झुठलाया इन से पहले नूह की जाति ने। तो झुठलाया उन्होंने हमारे भक्त को और कहा कि (पागल) है। और (उसे) झड़का गया।
10. तो उस ने प्रार्थना की अपने पालनहार से कि मैं विवश हूँ, अतः मेरा बदला ले ले।
11. तो हम ने खोल दिये आकाश के द्वार धारा प्रवाह जल के साथ।
12. तथा फाड़ दिये धरती के स्रोत, तो मिल गया (आकाश और धरती

وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ وَكُلُّهُمْ مُسْتَقَرٌّ ۝

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ الْآبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ ۝

حِكْمَةٌ بِالْعَمَىٰ فَمَا تَنْغِي النَّذْرُ ۝

فَقَوْلٌ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَىٰ شَيْءٍ مُّكْرٍ ۝

خُشَعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنتَشِرٌ ۝

مُهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَذَا يَوْمٌ عَرَجٌ ۝

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَازْدُجِرَ ۝

فَدَعَا رَبُّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَأَنْتَصِرْ ۝

فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُّنْهَمِرٍ ۝

وَفَجَّرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَىٰ أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝

1 अर्थात् प्रलय के दिन हिसाब के लिये।

का) जल उस कार्य के अनुसार जो निश्चित किया गया।

13. और सवार कर दिया हम ने उस (नूह) को तख्तों तथा कीलों वाली (नाव) पर।

وَحَمَلْنَاهُ عَلَى ذَاتِ الْاَوَاجِ وُدُورًا ۝

14. जो चल रही थी हमारी रक्षा में उस का बदला लेने के लिये जिस के साथ कुफ़ किया गया था।

نَجَّيْنَاهُ بِاَعْيُنِنَا جَزَاءً لِّمَن كَانَ كُفِرًا ۝

15. और हम ने छोड़ दिया इसे एक शिक्षा बना कर। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?

وَلَقَدْ تَرَكْنَهَا آيَةً فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ ۝

16. फिर (देख लो!) कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ?

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ ۝

17. और हम ने सरल कर दिया है कुर्आन को शिक्षा के लिये। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ ۝

18. झुठलाया आद ने तो कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ।

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ ۝

19. हम ने भेज दी उन पर कड़ी आँधी एक निरन्तर अशुभ दिन में।

اِنَّا ارْسَلْنَا عَلَيْهِمْ غَاسِقًا فِي يَوْمٍ نَخْسٍ مُّشْمَرٍ ۝

20. जो उखाड़ रही थी लोगों को जैसे वह खजूर के खोखले तने हों।

تَنْزِيلُ النَّاسِ كَالْهُمْ اَعْجَازٍ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ۝

21. तो कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ?

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ ۝

22. और हम ने सरल बना दिया है कुर्आन को शिक्षा के लिये। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ ۝



23. झुठला दिया समूह<sup>[1]</sup> ने चेतावनियों को।
24. और कहा: क्या अपने ही में से एक मनुष्य का हम अनुसरण करें? वास्तव में तब तो हम निश्चय बड़े कुपथ तथा पागलपन में हैं।
25. क्या उतारी गई है शिक्षा उसी पर हमारे बीच में से? (नहीं) बल्कि वह बड़ा झूठा अहंकारी है।
26. उन्हें कल ही ज्ञान हो जायेगा कि कौन बड़ा झूठा अहंकारी है?
27. वास्तव में हम भेजने वाले हैं ऊँटनी उन की परीक्षा के लिये। अतः (हे सालेह!) तुम उन के (परिणाम की) प्रतीक्षा करो तथा धैर्य रखो।
28. और उन्हें सूचित कर दो कि जल विभाजित होगा उन के बीच, और प्रत्येक अपनी बारी के दिन<sup>[2]</sup> उपस्थित होगा।
29. तो उन्होंने पुकारा अपने साथी को। तो उस ने आक्रमण किया और उसे बध कर दिया।
30. फिर कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ?
31. हम ने भेज दी उन पर कर्कश ध्वनी,

- كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ﴿١﴾  
فَقَالُوا أَبَشْرًا مِّمَّنَّا وَاجِدًا لِّتَبْعِهِ إِنَّآ إِذْ الْفِئُ ضَلَّيْ  
وَسُعُرِ ﴿٢﴾  
ءَالِيقِ الدَّكْرِ عَلَيْهِمْ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرُّ ﴿٣﴾  
سَيَعْلَمُونَ عَذَابِ الْكَذَّابِ الْآشِرِ ﴿٤﴾  
إِنَّا مُرْسِلُو النَّاقَةِ فِتْنَةً لَهُمْ فَارْتَبِعْهُمْ  
وَاصْطَبِرْ ﴿٥﴾  
وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ  
مُخْتَصِرٌ ﴿٦﴾  
فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَى فَعَقَرَ ﴿٧﴾  
فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٨﴾  
إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا

1 यह सालेह (अलैहिस्सलाम) की जाति थी। उन्होंने उन से चमत्कार की माँग की तो अल्लाह ने पर्वत से एक ऊँटनी निकाल दी। फिर भी वह ईमान नहीं लाया। क्योंकि उन के विचार से अल्लाह का रसूल कोई मनुष्य नहीं फरिश्ता होना चाहिये था। जैसा की मक्का के मुश्रिकों का विचार था।

2 अर्थात् एक दिन जल स्रोत का पानी ऊँटनी पियेगी और एक दिन तुम सब।

كَهَشِيمٍ الْمَخْتَصِرِ ۝

तो वे हो गये बाड़ा बनाने वाले की  
रौंदी हुई बाढ़ के समान (चूर-चूर)।

وَلَقَدْ يَتْرَأُ الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ ۝

32. और हम ने सरल कर दिया है कुर्आन  
को शिक्षा के लिये। तो क्या है कोई  
शिक्षा ग्रहण करने वाला?

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالَّذِي ۝

33. झूठला दिया लूत की जाति ने  
चेतावनियों को।

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ  
نَجَّيْنَاهُمْ بِسَحَرٍ ۝

34. तो हम ने भेज दिये उन पर, पत्थर  
लूत के परिजनों के सिवा, हम ने  
उन्हें बचा लिया रात्री के पिछले पहर।

يَعْبَهُ مَنْ عِنْدَنَا كَذَلِكَ يَجْزِي مَنْ شَكَرَ ۝

35. अपने विशेष अनुग्रह से। इसी प्रकार हम  
बदला देते हैं उस को जो कृतज्ञ हो।

وَلَقَدْ أَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالَّذِي ۝

36. और निःसंदेह (लूत) ने सावधान किया  
उन को हमारी पकड़ से। परन्तु उन्होंने  
संदेह किया चेतावनियों के विषय में।

وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَنْ ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا  
عَذَابَ يَوْمِكُمْ ۝

37. और बहलाना चाहा उस (लूत) को  
उस के अतिथियों<sup>[1]</sup> से तो हम ने  
अंधी कर दी उन की आँखें। कि चखो  
मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियों  
(का परिणाम)।

وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بِبُكْرَةٍ عَذَابٌ أُنْزِلَ ۝

38. और उन पर आ पहुँची प्रातः भोर ही  
में स्थायी यातना।

فَذُوقُوا عَذَابَ يَوْمِكُمْ ۝

39. तो चखो मेरी यातना तथा मेरी  
चेतावनियाँ।

وَلَقَدْ يَتْرَأُ الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ ۝

40. और हम ने सरल कर दिया है कुर्आन  
को शिक्षा के लिये तो क्या है कोई  
शिक्षा ग्रहण करने वाला?

1 अर्थात् उन्होंने अपने दुराचार के लिये फ़रिश्तों को जो सुन्दर युवकों के रूप में  
आये थे, उन को लूत (अलैहिस्सलाम) से अपने सुपुर्द करने की माँग की।

41. तथा फिरऔनियों के पास भी चेतावनियाँ आईं।
42. उन्होंने झुठलाया हमारी प्रत्येक निशानियों को तो हम ने पकड़ लिया उन को अति प्रभावी आधिपति के पकड़ने के समान।
43. (हे मक्का वासियों!) क्या तुम्हारे काफिर उत्तम हैं उन से अथवा तुम्हारी मुक्ति लिखी हुई है आकाशीय पुस्तकों में?
44. अथवा वह कहते हैं कि हम विजेता समूह हैं।
45. शीघ्र ही पराजित कर दिया जायेगा यह समूह, और वह पीठ दिखा<sup>[1]</sup> देंगे।
46. बल्कि प्रलय उन के वचन का समय है तथा प्रलय अधिक कड़ी और तीखी है।
47. वस्तुतः यह पापी कुपथ तथा अग्नि में हैं।
48. जिस दिन वे घसीटे जायेंगे यातना में अपने मुखों के बल (उन से कहा जायेगा कि) चखो नरक की यातना का स्वाद।
49. निश्चय हम ने प्रत्येक वस्तु को उत्पन्न किया है एक अनुमान से।
50. और हमारा आदेश बस एक ही बार

وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ النَّذْرُ

كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كُلِّهَا فَأَخَذْنَاهُمْ أَخَذَ  
عَزِيزٌ مُّقْتَدِرٌ

الْقَارُونَ خَيْرَيْنِ أَوَّلَ لَكُمْ أَمْ لَكُمْ بَرَاءَةٌ فِي  
الزُّبُرِ

أَمْ يَقُولُونَ غُبَيْمٌ مُّنتَصَرٍ

سَيَهْزِمُ الْجَمْعُ وَيُؤْتُونَ الدُّبُرَ

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمُ وَالسَّاعَةُ أَدْهَى وَأَمَرٌ

إِنَّ النُّجْرِمِينَ فِي ضَلَالٍ مُّسْعَرٍ

يَوْمَ يُصْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَى وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ  
سَقَرٍ

إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ

وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ

1 इस में मक्का के काफिरों की पराजय की भविष्यवाणी है जो बद्र के युद्ध में पूरी हुई। हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बद्र के दिन एक खूमे में अल्लाह से प्रार्थना कर रहे थे। फिर यही आयत पढ़ते हुये निकले। (सहीह बुखारी: 4875)



होता है आँख झपकने के समान।<sup>[1]</sup>

51. और हम ध्वस्त कर चुके हैं तुम्हारे जैसे बहुत से समुदायों को।

52. जो कुछ उन्होंने किया है कर्मपत्र में है।<sup>[2]</sup>

53. और प्रत्येक तुच्छ तथा बड़ी बात अंकित है।

54. वस्तुतः सदाचारी लोग स्वर्गों तथा नहरों में होंगे।

55. सत्य के स्थान में अति सामर्थ्यवान् स्वामी के पास।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاءَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ ۝

وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ۝

وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُّسْتَقَرٌّ ۝

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ۝

فِي مَقْعَدٍ صَدِيقٍ عِنْدَ مَلِكٍ مُّقْتَدِرٍ ۝

1 अर्थात् प्रलय होने में देर नहीं होगी। अल्लाह का आदेश होते ही तत्क्षण प्रलय आ जायेगी।

2 जिसे उन फरिश्तों ने जो दायें तथा बायें रहते हैं लिख रखा है।